* उद्योग व औद्योगिक विकास *

* मार्च 1969 में 'राजस्थान राज्य उद्योग' एवं खनिज विकास निगम लिमिटेड' की स्थापना की गई।

* सन 1979 में खनिज विकास निगम लिमिटेड को अलग कर दिया गया। अत: जनवरी 1980 से "राजस्थान राज्य उद्योग एवं विनियोजन निगम लिमिटेड" (RIICO) स्वतंत्र रूप से कार्यरत है।

1. RIICO → राजस्थान राज्य उद्योग एवं विनियोजन निगम लिमिटेड

स्थापना → 1969
स्वतंत्र रूप से कार्यरत → जनवरी 1980 से
मुख्यालय – जयपुर

* इसका मुख्य उद्देश्य बृहत, मध्यम, लघु औद्योगिक इकाइयों को कच्चे माल के साथ-2 वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाना है।
* राज्य में RIICO के 2 मुख्य आर्थिक जोन है → सीतापुरा – जयपुर, बोरानाड़ा – जोधपुर।

2. RFC → राजस्थान वित्त निगम

* राजस्थान वित्त निगम विभिन्न योजनाओ के माध्यम से वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाता है।
  स्थापना – अप्रैल 1955
  मुख्यालय – जयपुर

* यह एक कानूनी संस्था है।

* शिल्पबाड़ी योजना → इस योजना के तहत शिल्पकारों को कच्चे माल के साथ-साथ वित्तीय सहायता

3. सिंगल विंडो स्कीम योजना → इसको अपनाने वाला राजस्थान भारत का प्रथम राज्य है। इस स्कीम का लोकार्पण 10 मार्च 2000 को किया गया।

उपलब्ध करवाई जाती है। (अधिकतम - 5 लाख) यह लघुयोजना है।

2. टेक्नोक्रेट योजना → योग्यता प्राप्त व्यक्ति को स्वरोजगार हेतु लगभग 50 लाख तक का ऋण उपलब्ध करवाया जाता है। यह वृहत् योजना के अंतर्गत आती है।

3. RAJSICO → राजस्थान राज्य लघु उद्योग निगम लिमिटेड

* यह लघु उद्योगों के विकास के लिए कार्यरत है।
  स्थापना – जून 1961
  मुख्यालय – जयपुर

* इसका मुख्य कार्य 'लघु औद्योगिक इकाईयों' व 'हस्तशिल्प इकाईयों' को वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाना है।

4. RUDA → ग्रामीण गैर कृषि विकास अभिकरण

* इसका मुख्य उद्देश्य 'ग्रामीण क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाना' है।
* श्रमिकों को विकास करना।
* स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना का संबंध RUDA से है।
  स्थापना – नवम्बर 1995
  मुख्यालय – जयपुर

5. खादी ग्रामोद्योग बोर्ड →
  • प्रधान मुख्यालय – जयपुर
  • स्थापना – 1955

* इसमें 1 अध्यक्ष व 12 सदस्य होते हैं। 4 पदेन व 8 गैर सरकारी क्षेत्र से

* औद्योगिक नीतियाँ →

1. प्रथम औद्योगिक नीति → 24 जुन 1978 (भैरोसिंह शेखावत के कार्यकाल में)

* मुख्य उद्देश्य → अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध करवाना।
- खादी ग्रामोद्योग, हथ-करघा, हस्तशिल्प आदि क्षेत्रों के विकास के प्रयास
- लघु औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करना।

Note → इसे रोजगार उन्मुख औद्योगिक नीति के नाम से भी जाना जाता है।

2. द्वितीय औद्योगिक नीति → अप्रैल 1991

• मुख्य उद्देश्य → वित्तीय साधनों को बढ़ाने पर जोर दिया गया। (मशीनीकरण को बढ़ावा)

3. तृतीय औद्योगिक नीति → 15 जुन 1994

• मुख्य उद्देश्य → तीव्र औद्योगिकरण का लक्ष्य रखा गया।

4. चतुर्थ औद्योगिक नीति → 4 जुन 1998

• मुख्य उद्देश्य → समूह आधारित विकास की अवधारणा को अपनाया गया। (सहकारी)

5. पाँचवी औद्योगिक नीति → 25 अगस्त 2010 (अशोक गहलोत)

• इस औद्योगिक नीति को निवेश नीति के नाम से भी जाना जाता है।

6. छठी औद्योगिक नीति → 20 नवम्बर 2015

• मुख्य उद्देश्य → अधिक-से-अधिक उद्योगों की स्थापना एवं रोजगार उपलब्ध करवाना।

NOTE → द्वितीय पंचवर्षीय योजना में 'औद्योगिक विकास' को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

• तीसरी पंचवर्षीय योजना के तहत औद्योगिक क्षेत्रों से संबंधित आधारभूत सुविधाओं के विकास पर सर्वाधिक बल दिया गया।

• आठवी पंचवर्षीय योजना के तरह औद्योगिक विकास पर सर्वाधिक खर्च किया गया।

* प्रमुख उद्योग →

1. सूती वस्त्र उद्योग → यह कृषि पर आधारित सबसे बड़ा उद्योग है।

* वस्त्र उद्योग के विकास के लिए कच्चे माल के साथ-2 सम जलवायु क्षेत्र होना अति आवश्यक है।

* स्वतंत्रता प्राप्ति पूर्व राज्य में 7 सूती वस्त्र मिले थी जिनकी संख्या वर्तमान में 23 है।

निजी	17	23
सार्वजनिक	3	
सहकारी	3	

* राज्य में सूती वस्त्र उद्योग की प्रथम मिल →

1. द कृष्णा मिल्स लिमिटेड → 1889 ब्यावर - अजमेर
2. एडवर्ड मिल्स लिमिटेड → 1906 - ब्यावर - अजमेर
3. श्री महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड → 1925 - ब्यावर - अजमेर
4. विजय कॉटन मिल्स → 1932 - विजयनगर - अजमेर
5. मेवाड़ टेक्सटाइल मिल्स लिमिटेड → 1938 - भीलवाड़ा

6. महाराजा उम्मेद सिंह मिल्स लिमिटेड – 1942 पाली
7. सार्दुल टेक्सटाईल मिल्स लिमिटेड – 1946 श्री गंगानगर

* सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत सूती वस्त्र मिलें निजी क्षेत्र में स्थापित वह मिले है, जिन्हें वर्तमान में बंद कर दिया गया है।
  1. एडवर्ड मिल्स लिमिटेड — 1906 – ब्यावर – अजमेर
  2. श्री महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड — 1925 – ब्यावर – अजमेर
  3. विजय कॉटन मिल्स → 1932 विजयनगर – अजमेर

* सहकारी क्षेत्र में कार्यरत सूती वस्त्र मिले जो मुख्यत: कताई का कार्य करती है →
  1. राजस्थान सहकारी कताई मिल → 1965 – गुलाबपुरा – भीलवाड़ा
  2. श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल → 1978 – हनुमानगढ़
  3. गंगापुर सहकारी कताई मिल → 1981 – गंगापुर – भीलवाड़ा

[Extra
* प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना — कृषि विभाग, राजस्थान सरकार और भारत सरकार की योजना है।
फ्यूचर जेनेराली इंडिया इंश्योरेंस कंपनी केवल खरीफ के मौसम 2019 के लिए पीएमएफबीवाई का क्रियान्वयन सिर्फ अजमेर, जालौर, सवाई माधोपुर व कोटा में कर रही है।]

* भारत का मेनचेस्टर / पूर्व का बोस्टन – अहमदाबाद (गुजरात)

* उत्तरी भारत का मेनचेस्टर – कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

* सूती वस्त्र उद्योग की राजधानी – बम्बई

* राजस्थान का मेनचेस्टर – भीलवाड़ा

* राज्य का नवीनतम मेनचेस्टर – भिवाड़ी (अलवर)

2. चीनी उद्योग

* चीनी उद्योग विकास के लिए कच्चे माल के रूप में गन्ना व चुकंदर की आवश्यकता होती है।

* यह कृषि पर आधारित राज्य का दूसरा बड़ा उद्योग है।

* राज्य में चीनी उद्योग की प्रथम मील भोपालसागर (चित्तौड़) में स्थापित की गई।

* द मेवाड़ शुगर मिल्स लिमिटेड - 1932
→ इसके द्वारा एक सहायक मील की स्थापना 1976 ई. में की गई।
→ उदयपुर शुगर मिल्स लिमिटेड

* द गंगानगर शुगर मिल्स लिमिटेड → 1937 श्रीगंगानगर

→ राज्य का लगभग 71.8% उत्पादन कर प्रथम स्थान पर है।
→ यहाँ पर चुकन्दर से चीनी बनाने का कारखाना स्थापित है। (1968)
→ इस कारखाने में गन्ने के अपशिष्ट से शराब बनायी जाती है।
→ शराब की बोतलें "धौलपुर ग्लास वर्क्स" द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है।

* केशवरायपाटन सहकारी शुगर मिल्स लि. 1965 [बूंदी] (बंद है)

3. नमक उद्योग

* नमक उत्पादन की दृष्टि से राज्य का देश में तीसरा स्थान है।
जबकि झीलों द्वारा उत्पादित नमक के आधार पर राज्य का

का देश में प्रथम स्थान है।

* राज्य का सर्वाधिक उत्पादन "सांभर झील" से होता है। जो देश का लगभग 8.7% नमक उत्पादित करती है।

* देश का 12.10% उत्पादन राजस्थान से होता है।

* राज्य का लगभग 70% उत्पादन सार्वजनिक क्षेत्र व 30% उत्पादन नीजी क्षेत्रों से होता है।

* राज्य में झीलों से नमक उत्पादन दो विधियों द्वारा किया जाता है →

1. कैशीकाकर्षण / वाष्पीकरण विधि → इस विधि का सर्वाधिक उपयोग सांभर झील से नमक उत्पादन में किया जाता है।

2. वायु प्रवाह विधि → इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग पंचभद्रा में होता है जिससे उत्पादन नमक को रेस्ता कहा जाता है। पंचभद्रा में छोटे-2 कुए बनाकर नमक उत्पादन किया जाता है। जिस नमक को "कोशिया" तथा उन कुओं को भी "कोशिया" कहा जाता है।

Note → पंचभद्रा में प्राचीन काल से खारवाल जाति के लोग नमक उत्पादन करते है, यह लोग नमक उत्पादन में मोरली नामक झाड़ी की टहनी का प्रयोग करते है।

* राज्य में सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत 3 बड़े नमक उत्पादन कारखाने है →

1. हिन्दुस्तान साल्ट कम्पनी — सांभर जयपुर
2. सांभर साल्ट लिमिटेड - जयपुर
3. पंचभद्रा स्टेट वर्क्स लि. — बाड़मेर

* नावा नागौर में नमक उत्पादक ईकाईयो को तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाने के लिए आदर्श लवण उद्योग केन्द्र की स्थापना की गई है।
" मॉडल सॉल्ट फॉर्म "

* राज्य का नमक उत्पादक का लगभग 80% नमक उत्पादन सांभर झील से होता है।

* नीजि क्षेत्र में नमक उत्पादन निम्न स्थानों पर होताहै→

1. हीरागढ — बाड़मेर
2. पोकरण ⌉ जैसलमेर
3. कावोद ⌋
4. लूणकरणसर — बीकानेर
5. रैवासा — सीकर
6. फलौदी — जोधपुर
7. जावदी नगर — नागौर

Note→ निजि क्षेत्र में नमक उत्पादन ईकाईयों को " देवल" कहा जाता है।

5. ऊन उद्योग

* देश का लगभग 50% ऊन का उत्पादन राजस्थान मे होता है अत: ऊन उत्पादन की दृष्टि से राज्य का प्रथम स्थान है।

* केन्द्रीय ऊन बोर्ड → जोधपुर
* केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला → बीकानेर
* एशिया की सबसे बड़ी ऊन मण्डी → बीकानेर

* भेड़ व ऊन विभाग की स्थापना → 1963 में की गई। जिसके कार्यालय – जोधपुर, बीकानेर व जयपुर में है।

* ऊन का सर्वाधिक उत्पादन मारवाड़ी व जैसलमेरी भेड़ों से होता है।

* सबसे चमकदार ऊन का रेशा मगरा जबकि सबसे लम्बा रेशा नाली का माना जाता है।

* राज्य में ऊनी धागा बनाने के 6 कारखाने स्थापित हैं। जिसमे से सर्वाधिक 3 भीलवाड़ा में है।

* ऊन उत्पादन से संबंधित इकाईयां →

* स्टेट वूलन मिल्स → बीकानेर
  जोधपुर ऊन फेक्ट्री → जोधपुर
  वर्स्टेड स्पिनींग मिल्स → चुरू
  वर्स्टेड स्पिनींग मिल्स लाडनू → नागौर

5. कांच उद्योग

* कॉच उद्योग में कच्चे माल के रूप में बालू की मिट्टी की सर्वाधिक आवश्यकता होती है।

* राज्य में कॉच उद्योग का प्रमुख केन्द्र धौलपुर है।

* कॉच उद्योग के विकास के लिए खारा-बीकानेर मे

" काँच सिरेमिक कॉम्पलेक्स" की स्थापना की गई है।

* जबकि काँच सिरेमिक परिक्षण प्रयोगशाला" की स्थापना बीकानेर में की गई है।

* काँच उद्योग से संबंधित इकाईयाँ →

1. धौलपुर ग्लास वर्क्स → धौलपुर
2. दि हाइटेक प्रीसीजन ग्लास फैक्ट्री → धौलपुर
3. सैमकोर ग्लास फैक्ट्री → कोटा → यहाँ पर टीवी पिक्चर ट्यूब बनाई जाती थी (यह कारखाना वर्तमान में बंद है)
4. सैन्ट गोबेन ग्लास फैक्ट्री → भिवाड़ी अलवर
→ यह फ्रांस के सहयोग से स्थापित हुई है।

* काँच उद्योग के छोटे-छोटे कारखाने निम्न जिलों में स्थापित है →

1. जयपुर
2. कोटा
3. उदयपुर
4. बीकानेर
5. पाली
6. जोधपुर
7. भरतपुर

* राज्य में काँच से निर्मित एक हवाई पट्टी किशनगढ़ - अजमेर में बनाई गई है।

6. सीमेंट उद्योग

* सीमेंट उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में चूना पत्थर की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। राज्य में सीमेंट उद्योग का प्रथम कारखाना "क्लिक निक्सन कम्पनी" के सहयोग से लाखेरी बूंदी में स्थापित किया गया।

* वर्तमान में अजमेर, ~~टोंक~~ के रामगालिया (भिनाय) का 'टाइगर' एवं टोंक के मालपुरा का "ब्लेकनीयर" ग्रेनाइट विदेशों में पसंद किया जा रहा है। (जालोर के बाद अजमेर, टोंक ग्रेनाइट हब)
जालोर के बाद पाली, ब्यावर, भिनाय, केकड़ी, मराई एवं मालपुर में ग्रेनाइट की नई पट्टी।

A.C.C सीमेंट कारखाना (एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनी)

स्थापना → 1912-13
उत्पादन → 1915

* राज्य में स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात जयपुर उद्योग लिमिटेड द्वारा एक कारखाने की स्थापना सवाईमाधोपुर में की।

* त्रिभुवन छाप सीमेंट कारखाना → 1953 सवाई माधोपुर (वर्तमान में बंद है)

* राज्य में सीमेंट उद्योग का सबसे बड़ा कारखाना → श्री सीमेंट कारखाना ब्यावर अजमेर में स्थापित है।

* श्री सीमेंट कारखाने को ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में 2 बार पुरस्कार प्रदान किया गया है। "गोल्डन पीकोक अवार्ड"

* राज्य में सर्वाधिक उत्पादन क्षमता वाला कारखाना J.K सीमेंट कारखाना निम्बाहेड़ा, चित्तौड़ में स्थापित है।

Note → राज्य का सर्वाधिक सीमेंट उत्पादन चित्तौड़ में होता है।

* न्यूनतम सीमेंट उत्पादन क्षमता वाला श्रीराम सीमेंट कारखाना कोटा है।

* सफेद सीमेंट का सर्वाधिक उत्पादन गोटन नागौर में होता है। राजस्थान में सफेद सीमेंट का पहला कारखाना J.K White Cement नाम से गोटन नागौर में स्थापित है।

★ राज्य का सबसे बड़ा व सर्वाधिक उत्पादन क्षमता वाला सफेद सीमेंट कारखाना खारीया खंगार जोधपुर में स्थापित है।

★ सफेद सीमेंट के प्रस्तावित कारखाने →
→ मांगरोल – चित्तौड़
→ बारां

★ अन्य प्रमुख उद्योग →

★ राज्य में चमड़ा उद्योग का प्रमुख केन्द्र → मानपुरा माचेड़ी (जयपुर) में है।

★ राज्य में ट्यूब - टायर बनाने का कारखाना → कांकरोली राजसमंद में स्थापित है।

★ राज्य में रेल के डिब्बे बनाने वाली फेक्ट्री → सीमको वेगन फेक्ट्री भरतपुर में स्थापित है।

★ यह फेक्ट्री सन – 2000 से बंद थी। किंतु सन 2008 में टिटागढ़ वैगन कम्पनी द्वारा पुनः चलाया गया है।

★ राजस्थान में सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क → कनकपुरा जयपुर में बनाया गया है जबकि सॉफ्टवेयर इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर टेक्नोलॉजी पार्क → कुकस जयपुर में बनाया गया है।

★ सूचना टेक्नोलॉजी से संबंधित सॉफ्टवेयर कॉम्पलेक्स की स्थापना → सीतापुरा जयपुर में की गई है।

★ राज्य में HMT का प्रमुख कारखाना → अजमेर में है।

* राज्य मे निर्यात संवंर्धन औद्योगिक पार्क सीतापुरा
जयपुर में बनाया गया है।

लघु / कुटीर उद्योग → [हस्तशिल्प]

थेवा कला	—	प्रतापगढ़
पिछवाई कला	—	नाथद्वारा - राजसमंद
मरब का काम	—	जयपुर
ब्लू पॉटरी	—	जयपुर (नेवटा)
फड़ चित्रण	—	शाहपुरा भीलवाड़ा
सुनहरी टेराकोटा	—	बीकानेर
पाव रजाई	—	जयपुर
जाजम प्रिंट	—	आकोला (चित्तौड़)
गोटे का काम	—	खण्डेला (सीकर)
अजरख प्रिन्ट, मलीर प्रिंट	—	बाड़मेर
कागजी टेराकोटा	—	अलवर
कठपुतलियां	—	उदयपुर
रमकड़ा खिलौना	—	गलियाकोट डूंगरपुर
मलमल	—	मथानिया जोधपुर
नमदे	—	टोंक
लकड़ी के झूले	—	जोधपुर
मिट्टी के खिलौने	—	मोलेला राजसमंद, बस्सी चित्तौड़
गलीचे	—	बीकानेर, टोंक

* ऊर्जा संसाधन *

* ऊर्जा संसाधन मुख्यतः दो प्रकार के होते है ->

1. परम्परागत ऊर्जा संसाधन
2. गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन

1 परम्परागत ऊर्जा संसाधन ->

* यह अनवीनीकरण संसाधन है -> जैसे -> कोयला, खनिज तेल प्राकृतिक गैस, आण्विक खनिज आदि।

2. गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन ->

* ऊर्जा के नवीनीकरण संसाधान है। जैसे -> सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा, बायोगैस ऊर्जा भूतापीय ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा आदि।

Note -> जल विद्युत ऊर्जा को दोनो मे सम्मिलित किया जाता है।

1. सौर ऊर्जा संसाधन

* राज्य के पश्चिमी जिले प्रति वर्ग मीटर (धरातल पर) 5.8 – 6.4 किलोवाट (उत्पादन मे- मेगावाट) सौर ऊर्जा की प्राप्ति करते है।

* ★ आगामी समय मे सर्वाधिक संभावना इसी ऊर्जा संसाधन की है।

* 1992★ मे गैर परम्परागत ऊर्जा मंत्रालय द्वारा "आदित्य" नाम से सरकारी दुकानो की स्थापना की है। जहाँ से उपभोक्ताओं को सौर ऊर्जा उपकरण उपलब्ध करवाये जाते है।

SEEZ - सौलर एनर्जी एंटरप्राइजेज जोन - जैसलमेर-जोधपुर, बाड़मेर

* सौर ऊर्जा जॉन → SEEZ में राज्य के मुख्यत: 3 जिले सम्मिलित किये जाते है → जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर। (वर्तमान में 7 जिले है)

Note → सौर ऊर्जा से संबंधित प्रमुख स्थान →

गौरिर — झुंझुनू
मथानिया — जोधपुर
अगोरिया — बाड़मेर
मोखला गाँव — जैसलमेर

* भारत में सौर ऊर्जा की प्रथम परियोजना "सौलर पार्क परियोजना 5.6 मेगावाट फलौदी (जोधपुर) में संचालित की गयी।

* राज्य में प्रथम सौलर पार्क बड़ला (जोधपुर) में स्थापित किया गया।

* नीजी क्षेत्र राज्य की प्रथम सौर ऊर्जा परियोजना (5 मेगावाट) खींवसर (नागौर) में संचालित है।

* राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा चालित फ्रीज बालेसर (जोधपुर) में स्थापित किया गया।

* राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा चालित दूरदर्शन केन्द्र रावतभाटा (चितौड़) में है।

* राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा विद्युतीकृत गाँव नयागाँव (जयपुर) में है।

* खारे पानी को मीठे पानी में परिवर्तित करने वाला प्रथम सौर ऊर्जा संयन्त्र भालेरी (चुरु) में स्थापित किया गया।

* राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा चालित A.T.M मनोहपुरा (जयपुर) में स्थापित है।

* राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा चालित रेलवे स्टेशन गोरमघाट रेलवे स्टेशन (अजमेर मण्डल) में है।

* राज्य की प्रथम सौर वेधशाला फतेहसागर झील के किनारे उदयपुर में स्थापित है।
* इस सौर वेधशाला में भारत का सबसे बड़ा "टेलीस्कोप" स्थापित किया गया है जिसका निर्माण बेल्जियम में हुआ है।

2. पवन ऊर्जा

पवन ऊर्जा के चिन्हित स्थान - 26

* पवन ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना पश्चिमी राजस्थान में है।

* Oct 1999 राज्य का प्रथम पवन ऊर्जा संयंत्र "राजस्थान स्टेट पावर कॉरपोरेशन" द्वारा अमरसागर (जैसलमेर) में स्थापित किया गया। (2 मेगावाट)

* राज्य में निजि क्षेत्र का प्रथम पवन ऊर्जा संयंत्र बड़ाबाग (जैसलमेर) में स्थापित किया गया है।

* "Indian Institute of tropical Energy Company" द्वारा राज्य के 26 स्थान चिन्हित किये गये हैं जिनमे से प्रमुख निम्न है →

1. ~~[illegible]~~ → जैसलमेर → अमरसागर, बड़ा बाग, मोहनगढ़, सौढा, बान्धन, तेमडेराय।

2. चित्तौड़ → देवगढ़, धमोत्तर

3. बाड़मेर → खाड़ोल
4. उदयपुर → जसवंतगढ़
5 सीकर → हर्षपर्वत
6 जोधपुर → फलौदी, बीठड़ी

* राज्य में सबसे बड़ा पवन ऊर्जा संयंत्र सोढा बान्धन (जैसलमेर) है जबकि सर्वाधिक उत्पादन वाला हर्ष पर्वत सीकर में स्थापित है।

☆ बायोमास ऊर्जा ☆

⇒ बायोमास ऊर्जा के लिए पदार्थ के रूप में चावल की भूसी, विलायती बबूल, सरसों की तुडी, कपास के डण्ठल आदि का उपयोग किया जाता है।

राज्य में बायोमास ऊर्जा आधारित प्रथम संयंत्र- मैसर्स कल्पतरु एनर्जी कम्पनी द्वारा पदमपुर (श्रीगंगानगर) में स्थापित किया।

मैसर्स कल्पतरु एनर्जी कम्पनी द्वारा बायोमास ऊर्जा के लिए चिन्हित किये गये स्थान :-
कोटकासीम - अलवर
नदबई - भरतपुर
सवाई माधोपुर.

राज्य में बायोमास ऊर्जा आधारित 113 MW की 10 परियोजनाएं निम्न स्थानों पर संचालित है।

(1) बालोतरा (बाड़मेर)
(2) अलवर
(3) कोटपुतली (जयपुर)
(4) पाली

⑤ पद्मपुर (श्रीगंगानगर) 7. भरतपुर
⑥ रंगपुर (कोटा) 8. टोंक
9. सारथल (बारां)
10. सवाई माधोपुर

केप्टिव पावर प्लांट योजना के तहत खेड़ली (अलवर) में 30 MW का सरसों की खल आधारित बायोमास ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है।

'अजमेर' में 'विलायती बबूल' से बिजली उत्पादित की जाती है।

☆ बायोगैस ऊर्जा ☆

* जानवरो के मलमूत्र की वायुरहीत अवस्था में उपघटन करने पर एक ज्वलनशील गैस का निर्माण होता है। जिसमें लगभग 65% मीथेन, 30% कार्बनडाइऑक्साइड व लगभग 1 या 2% हाइड्रोजन की मात्रा मिलती है।

* राज्य में बायोगैस आधारित सर्वाधिक संयंत्र उदयपुर में स्थापित किये गये है।

* ग्रामीण क्षेत्रों में बायोगैस ऊर्जा के लिए 2 प्रकार के बायोगैस मॉडल स्थापित किये गये है :-

1. जनता मॉडल / दीनबन्धु मॉडल
2. खादी ग्रामोद्योग कमीशन मॉडल

आण्विक ऊर्जा / परमाणु ऊर्जा

1. राज॰ एटोनोमिक पॉवर प्लांट - रावतभाटा - चित्तौड़ । सन् 1965 कनाडा के सहयोग से स्थापित।

→ यह "नाभिकीय ऊर्जा निगम लिमिटेड" द्वारा संचालित है।

→ राज्य के विद्युत उत्पादन में लगभग 30% सहयोग ।

नरोरा परमाणु शक्ति संयंत्र - उत्तरप्रदेश

राज्य का हिस्सा - 9.2%

→ इसके सहयोग से 440 MW का एक शक्ति संयंत्र नापला गाँव बाँसवाड़ा में स्थापित किया जायेगा।

→ राज्य का दूसरा परमाणु शक्ति संयंत्र दानपुर बाँसवाड़ा में निर्माणाधीन है।

* गैस आधारित प्रमुख परियोजनाएं *

1. रामगढ़ गैस विद्युत परियोजना → रामगढ़ (जैसलमेर)

* यह बेंगलुरु के सहयोग से संचालित है।

* उत्पादन क्षमता - 110 मेगावाट

2. अन्ता गैस विद्युत परियोजना → अंता ~~धौलपुर कम्बाईंड साईकि~~

3. धौलपुर कम्बाईंड साईकिल परियोजना → धौलपुर
(नैफ्था (कच्चा पदार्थ) आधारित)

४. ताप विद्युत :→

१. सूरतगढ़ सुपरथर्मल पॉवर स्टेशन — ठुकराणा गाँव (श्रीगंगानगर)

* उत्पादन क्षमता — २४२० मेगावाट
उत्पादन — 15%

२. कोटा सुपर थर्मल पॉवर परियोजना — कोटा

* उत्पादन — १२४० मेगावाट

३. कालीसिंध ताप विद्युत परियोजना — झालावाड़

* उत्पादन — 1700 मेगावाट

४ गिरल ताप विद्युत परियोजना — थुम्बली गाँव (बाड़मेर)

* उत्पादन — 500 मेगावाट

* राज्य का पहला लिग्नाइट आधारित गैसीय विद्युत गृह जो जर्मनी के सहयोग से संचालित है।

5. गुढ़ा थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट योजना → बीकानेर

* नीजि क्षेत्र में स्थापित राज्य का प्रथम लिग्नाइट आधारित।

6. छबड़ा थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट योजना → मोतीपुरा (बाराँ)

7. भादेरनर लिग्नाइट पॉवर प्रोजेक्ट योजना → बाड़मेर

* इसका संचालन राज्य की प्रथम ऊर्जा कम्पनी "लिग्नाइट माइनिंग कम्पनी" द्वारा किया जा रहा है।

5. जल विद्युत :→

1. भांखड़ा नांगल नदी घाटी परियोजना →

* नदी — सतलज

* संयुक्त राज्य 4 → राजस्थान, पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश।

* राज्य का हिस्सा → 15.2 % (15.21)

2. व्यास परियोजना → * नदी — व्यास

* संयुक्त राज्य 4 → राजस्थान, पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश

* राज्य का हिस्सा → 20 %

3. चंबल परियोजना →

* संयुक्त राज्य 2 → राजस्थान, मध्यप्रदेश
* राज्य का हिस्सा → 50 : 50

4. माही परियोजना →

* संयुक्त राज्य 2 → राजस्थान, गुजरात
* राज्य का हिस्सा → 45 : 55

5. राहु घाट परियोजना → नदी → चंबल

* संयुक्त राज्य 2 → राजस्थान, मध्यप्रदेश
50 : 50

उद्गम – गोमुख
वास्तविक गंगा

6. टिहरी बांध परियोजना → नदी – भागीरथी/गंगा (उत्तराखंड)

* संयुक्त राज्य 3 – उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, राजस्थान

* राज्य का हिस्सा → 7.5 %

7. चमेरा परियोजना → नदी – चमेरा

* राज्य का हिस्सा – 8.6 %

* संयुक्त राज्य 6. → हिमाचल प्रदेश – जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश व राजस्थान।

8. नाथपा झाकरी परियोजना → नदी – सतलज

* संयुक्त राज्य → उत्तराखंड, हिमाचलप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान।

* राज्य का हिस्सा → 7.47 %

9. पार्वती परियोजना → नदी – पार्वती

* संयुक्त राज्य → राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश व हिमाचल प्रदेश

* राज्य का हिस्सा → 3.7 %

10 जाखम परियोजना → नदी – जाखम (राजस्थान में)

* उत्पादन → 2.75 मेगावाट

11. अनास परियोजना → नदी – अनास

* उत्पादन → 45 मेगावाट

१२. इंदिरा गांधी नहर परियोजना → उत्पादन → २८.४५ मेगावाट

* इसकी सूरतगढ़ व अनुपगढ़ शाखाओं पर विद्युत गृह स्थापित किये गये है।